तालीमात ए आलाहज़रत

100वां उर्से ए रज़वी मुबारक हो

खुदा और रसूलﷺ की मुहब्बत किस तरह दिल में पैदा हो?

तिलावत ए क़ुरआन ए मजीद और दुरूद शरीफ की कसरत और नात शरीफ के सही अशआर खुश इल्हानों(यानी सुरीली आवाज़ वाले) से व कसरत सुनें और अल्लाह व रसूलﷺ की नेअमतों और रहमतों में जो उस पर हैं गौर करे

किसी शख्स से बैअत होने के लिए उसमें 4 शर्तों का होना ज़रूरी

1 . सुन्नी सहीहुल अक़ीदह हो
2 .कम अज़ कम इतना इल्म ज़रूरी है के बिला किसी की इमदाद के अपनी ज़रुरत के मसाइल किताब से खुद निकाल सके
3 .उस का सिलसिला हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ तक मुत्तसिल (यानी मिला हुआ) हो
4 .फ़ासिक़ ए मुअलिन (यानी ऐलानिया गुनाह करने वाला) न हो

मज़ारों पर हाज़िरी के आदाब

4 हाथ के फासले पर खड़े होकर फातिहा पढ़े और उसकी हयात में जैसा अदब करता था (वैसा ही अब भी करे) ,सामने से हाज़िर हो

औरतों की मज़ार पर हाज़िरी

गुनिया में है "ये न पूछो के औरतों का मज़ारात पर जाना जाएज़ है या नहीं ,बल्कि ये पूछो के उस औरत पर किस क़दर लानत होती है अल्लाह की तरफ से और किस क़दर साहिब ए क़ब्र की जानिब से ,जिस वक़्त वो घर से इरादा करती है लानत शुरू हो जाती है और जब तक वापस आती है फ़रिश्ते लानत करते रहते हैं सिवा ए रौज़ा ए रसूल ﷺ के किसी मज़ार पर जाने की इजाज़त नहीं

बदमज़हब के पास बैठना और उनकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ना

बदमज़हब के पास बैठना हराम है और बदमज़हब हो जाने का अंदेशा ए कामिल और दोस्ताना हो तो दीन के लिए ज़हर ए क़ातिल और वहाबी, राफ़्ज़ी, कादयानी वगैरह कुफ्फार मुर्तद्दीन के जनाज़े की नमाज़ उन्हें ऐसा (यानी काफिर) जानते हुए पढ़ना कुफ्र है

वहाबिया की नमाज़ और मस्जिद

न उनकी नमाज़, नमाज़ है न उनकी जमाअत, जमाअत और उनकी मस्जिद मिस्ल ए घर के है

हवाला: मलफ़ूज़ात ए आलाहज़रत

आलाहज़रत की वसीयत अवाम ए अहले सुन्नत के लिए

प्यारे भाईओं ! मुझे मालूम नहीं के मैं कितने दिन तुम्हारे अंदर ठहरूं तीन ही वक़्त होते हैं बचपन , जवानी ,बुढ़ापा | बचपन गया जवानी आयी जवानी गयी बुढ़ापा आया अब कोनसा चौथा वक़्त आने वाला है जिस का इंतज़ार किया जाये ,एक मौत ही है,अल्लाह क़ादिर है के ऐसी हज़ार मजलिसें अता फरमाए और आप सब लोग हों ,मैं हूँ और मैं आप सब लोगों को सुनाता हूँ मगर वज़ाहिर इस की उम्मीद नहीं इस वक़्त मैं दो वसीयतें आप लोगों को करना चाहता हूँ एक तो अल्लाह व रसूल ﷺ की और दूसरी खुद मेरी **तुम मुस्तफाﷺ की भोली भेंड़ें हो भेड़िये तुम्हारे चारो तरफ हैं ये चाहते हैं के तुम्हें बहकायें तुम्हें फ़ितने में डाल दें तुम्हें अपने साथ जहन्नुम में ले जाएँ उन से बचो और दूर भागो देओबंदी हुए, राफ़्ज़ी हुए, नेचरी हुए, कादयानी हुए,चकड़ालवी हुए गरज़ कितने ही फ़िरक़े हुए और अब सब से नए गांधवी हुए जिन्होंने उन सब को अपने अंदर ले लिया ये सब भेड़िये हैं तुम्हारे ईमान की ताक में हैं इन के हमलों से ईमान को बचाओ**
हुज़ूर ﷺ रब उल इज़्ज़त के नूर हैं हुज़ूर से सहाबा रौशन हुए उन से ताबेईन रौशन हुए उन से अयम्मा ए मुज्तहेदीन रौशन हुए उन से हम रौशन हुए अब हम तुम से कहते हैं ये नूर हम से ले लो हमें इस की ज़रुरत है के तुम हम से रौशन हो वो नूर ये है के अल्लाह व रसूलﷺ से सच्ची मुहब्बत,उन की ताज़ीम और उन के दोस्तों की खिदमत और उन की तकरीम और उन के दुश्मनों से सच्ची अदावत **जिस से अल्लाह व रसूलﷺ की शान में अदना तौहीन पाओ फिर वो तुम्हारा कैसा ही प्यारा क्यों न हो फ़ौरन उस से जुदा हो जाओ जिस को बारगाहे ए रिसालतﷺ में ज़रा भी गुस्ताख़ देखो फिर वो तुम्हारा कैसा ही बुज़ुर्ग मुअज़्ज़म क्यों न हो अपने अंदर से उसे दूध से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दो**

मैं पौने चौदह बरस की उम्र से यही बताता रहा और इस वक़्त फिर यही अर्ज़ करता हूँ अल्लाह तआला अपने दीन की हिमायत के लिए किसी बन्दे को खड़ा कर देगा मगर मालूम नहीं मेरे बाद जो आये कैसा हो ,और तुम्हें क्या बताये इस लिए इन बातों को खूब सुन लो हुज्जत उल अल्लाह क़ायम हो चुकी अब मैं क़ब्र से उठ कर तुम्हारे पास बताने न आऊंगा जिस ने इसे सुना और माना क़यामत के दिन उस के लिए नूर व निजात है और जिस ने न माना उस के लिए ज़ुल्मत व हलाकत ये तो खुदा व रसूलﷺ की वसीयत है जो यहाँ मौजूद हैं सुनें और मानें और जो यहाँ मौजूद नहीं तो हाज़िरीन पर फ़र्ज़ है के ग़ायबीन को इस से आगाह करें **अवाम ए अहले सुन्नत से अपील है के ख़ुदारा ख़ुदारा ! ऐसे काम बिलकुल न करें जिससे हमारे मज़हब अहले सुन्नत व जमाअत (मसलक ए आला हज़रत) को नुकसान पहुंचे और जो आलाहज़रत ने हमें तालीम दी हैं उस पर अमल करें और मसलक ए आलाहज़रत पर क़ायम रहें अल्हम्दुलिल्लाह हम ही अहले सुन्नत व जमाअत(जन्नती जमाअत) हैं**

तहरीक निज़ामे मुस्तफाﷺ